मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह

सल्ल.

37

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और बहुत रहम वाला है।

सब तअरीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो सब जहानों का रब है। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल.पर और आपकी आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर!

व बअद!

'' मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह '' यानि मुहम्मद (सल्ल.) अल्लाह के रसूल हैं। '' अल्लाह तआला ने जिन्न व इन्सानों की हिदायत व रहनुमाई के लिए 1 लाख 24 हज़ार अम्बिया किराम अलैहि. को मबऊस फ़रमाया। इनमें 315 रसूल हैं।'' (मुसनद अहमद–हसन–अल्बानी) क़ुरआन व हदीस में 26 का ज़िक्रे खै़र उनके नामों के साथ आया है। बाक़ी अम्बिया के नाम और हालात के बारे में अल्लाह ही को इल्म है। फ़रमाने इलाही है'' यक़ीनन हमने आप से पहले बहुत से रसूलों को भेजा। जिनमें से कुछ का ज़िक्र हमने आप से किया और कुछ का नहीं किया।'' (मुअमिनून–आयत–78)

'' अल्लाह तआला ने इब्राहीम अलैहि. की औलाद में इस्माईल अलैहि. को बुज़ुर्गी अता की। औलादे इस्माईल अलैहि. में से कनाना को चुना और क़बीले कनाना में से क़ुरैश को पसन्द फ़रमाया। फिर क़ुरैश में से बनी हाशम को फ़ौक़ियत दी और बनु हाशम में से मुझे फ़ज़ीलत अता की।'' (मुस्लिम–6207, तिर्मिज़ी–3348–वासेला रज़ि.)

नसब–नामा (बाप की तरफ़ से):– मुहम्मद (सल्ल.) बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशम बिन अब्दे मनाफ़ बिन क़ुसीअ बिन किलाब बिन मुर्रा बिन कअब बिन लौई बिन ग़ालिब बिन फ़हर बिन मालिक बिन नज़्र बिन कनाना............।

नसब (मां की तरफ़से):– मुहम्मद (सल्ल.) बिन आमेना बिन्ते वहब बिन अब्दे मनाफ़ बिन ज़हरा बिन किलाब बिन मुर्रा.................।(रहीक़ुल मख़्तूम–सफ़ा–73)

हुलिया–मुबारकः–

(1)'' आप सल्ल. गोरा रंग सुर्ख़ी लिये हुए और दर्मियाना कद व क़ामत वाले थे।'' (मुस्लिम–6334–अबु तुफ़ैल रज़ि.)

(2) अली रज़ि. का बयान है'' आप सल्ल. का क़द मुबारक न ज़्यादा लम्बा और न ही छोटा था। बल्कि दराज़ी मायल दर्मियाना क़द, बाल मुबारक न बहुत ज़्यादा घुंघराले न बिल्कुल खड़े थे। रूख़सार मुबारक न बहुत ज़्यादा गोश्त से पुर, न ठोड़ी छोटी और न पतली पैशानी बल्कि चेहरा ए अनवर किसी क़दर गोलाई लिये हुए, रंग गोरा गुलाबी, आंखे सुरमगीं हल्की लाली लिये हुए, लम्बी पलकें, जोड़ों की हड्डियां बड़ी–बड़ी, सीना पाक से नाफ़ तक बालों की हल्की सी लकीर, हाथ व पांव की उंगलियां पुर गोश्त, चलते तो लगता ढ़लान पर चल रहे हों। दोनों कन्धों के बीच मोहरे नबुवत थी। आप (सल्ल.) ख़ातिमुन्नबी– ईन थे। देखने वाला बेसाख़्ता पुकार उठता कि आप से पहले और आप के बाद आप सल्ल. जैसा नहीं देखा।'' (तिर्मिज़ी–3381–हसन)

(3)'' आप सल्ल. का चेहरा कुशादा, आखें हल्की सुर्ख़ी लिये हुए और ऐड़ियां पतली थीं।'' (तिमिर्ज़ी–3387, मुस्लिम–6332–जाबिर बिन सुमरा रज़ि.)

(4) '' आप सल्ल. का क़द दर्मियाना और सीना चौड़ा था। बाल बहुत थे कानों की लौ तक।'' (बुख़ारी–3551, मुस्लिम–6326–बरॉ रज़ि.)

(5) '' आप सल्ल. दर्मियाना क़द के, सुर्ख़ व सफ़ेद रंगत वाले थे। आप के बाल न बिल्कुल घुंघराले थे और न सीधे लटके हुए।''(बुख़ारी–3547–48–अनस रज़ि.)

विलादतः– मुहम्मद (सल्ल.) मक्का में 9 रबीउल अव्वल सन 1 आमुल–फ़ील पीर की सुबह पैदा हुए। उस वक़्त नौशैर वां की तख़्त नशीनी का 40 वां साल था और अंग्रेजी तारीख़ 22 अप्रेल 571 ईसवी थी।(रहीक़ुल मख़्तूम–सफ़ा–83) जब आपके वालिद

अब्दुल्लाह का इन्तेक़ाल हुआ। तब आप सल्ल. मां (आमेना) के पेट में ही थे। जब आप (सल्ल.) 6 साल के हुए तो वालेदा का इन्तेक़ाल हो गया। जब उम्र 8 साल की हुई तो दादा अब्दुल मुत्तलिब भी फ़ौत हो गये। इसके बाद चचा अबि तालिब और चची हाला ने आपकी देख–रेख की। 12 साल की उम्र में पहला तिजारती सफ़र चचा अबि तालिब के साथ शाम (सीरिया) का किया। 25 साल की उम्र में आप सल्ल. ने पहला निकाह ख़दीजा रज़ि. से किया। जो उस वक़्त 40 साल की थीं। निकाह का ख़ुत्बा चचा अबि तालिब ने 20 ऊंटनी महर पर पढ़ा। शादी के कुछ सालों बाद से आप ग़ारे' हिरा' जाकर इबादते इलाही में मसरूफ़ रहने लगे। आप सल्ल. मक्का में सादिक़' और' अमीन' के लक़ब से पुकार जाते थे। जब आप सल्ल. की उम्रे मुबारक 40 साल की हुई तो अल्लाह ने आप पर ग़ारे हिरा में पहली वहय नाज़िल फरमाई। आप सल्ल. पर सबसे पहले ईमान लाने वाले (1) (औरतों में) ख़दीजा रज़ि. (2) (मर्दों में) अबुबकर रज़ि. (3) (बच्चों में) अली रज़ि. (4) (गुलाम) ज़ैद बिन हारिसा रज़ि. और (5) (बांदी) उम्मे ऐमन रज़ि. हैं।

वफ़ात:– 11 हिजरी 29 सफ़र पीर के दिन एक जनाज़े से लौटते हुए आपके सर में दर्द हुआ। फिर बुख़ार ने आप को आ लिया। 12 रबीउल अव्वल 11 हिजरी पीर की सुबह 63 साल 4 दिन की उम्र पूरी कर आप सल्ल. यह दुनिया छोड़ दूसरी दुनिया को तशरीफ़ ले गये। आप सल्ल. की नमाज़े जनाज़ा पहले फ़रिश्तों ने पढ़ी। फिर असहाबे रसूल सल्ल. ने बिना जमाअत के अलग–अलग अदा की। वफ़ात के 32 घन्टों बाद आएशा रज़ि. के हुज्रे में जहां आपका इन्तेक़ाल हुआ था दफ़न किये गये। (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊन) (रहमतुल्लिल आलामीन)

मुहम्मद (सल्ल.) की बीबियां:–

(1) **ख़दीजा रज़ि. बिन्ते ख़ुवैलिद** :– आप रज़ि. का पहला निकाह'' अतीक़'' से हुआ। उनकी वफ़ात के बाद'' अबु हाला'' से। जब यह भी फ़ौत हो गये तो 40 साल की उम्र में आपने मुहम्मद (सल्ल.) से निकाह किया। 65 साल की उम्र में 10नबुवत में आपका इन्तेक़ाल हुआ। आप सल्ल. की सब औलादें इन्ही के बतन से हुई सिवाए इब्राहीम रज़ि. के।

(2) **सौदा बिन्ते ज़मआ रज़ि.** :– पहले शौहर'' सकरान'' की वफ़ात के बाद 50 साल की उम्र में 400 दिरहम मेहर पर आप सल्ल. से निकाह हुआ। 72 साल की उम्र में मदीना में वफ़ात पाई।

(3) **आएशा बिन्ते अबि बकर रज़ि.** :– यही आप सल्ल. की इकलौती कुंवारी बीवी थीं। 9 साल आप सल्ल. के साथ रहीं। 57 हिजरी में आप फ़ौत हुई।

(4) **हफ़्सा बिन्ते उमर रज़ि.** :– आपका पहला निकाह'' ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा रज़ि. से हुआ जो जंगे उहद में ज़ख्मी होकर मदीना में फ़ौत हुए। बाद में 23 साल की उम्र में आप सल्ल. के निकाह में आई 8 साल आप सल्ल. के साथ रहीं। 41 हिजरी में 60 साल की उम्र पाकर वफ़ात पाई।

(5) **ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ि.** :– इनका पहला निकाह'' तूफ़ैल'' से दूसरा' उबैदा' से और तीसरा अब्दुल्लाह बिन जहश' से हुआ था। चौथा निकाह आप सल्ल. से हुआ। 3 माह आप सल्ल. के निकाह में रहकर फ़ौत हुई।

(6) **उम्मे सल्मा रज़ि.** :– आपके पहले शौहर' अबु सल्मा' रज़ि. थे। यह बद्र में शहीद हो गये थे। 4 हिजरी में 26 साल की उम्र में आप सल्ल. के निकाह में आई। 7 साल के क़रीब आप सल्ल. के साथ रहीं। आपने 60 हिजरी में वफ़ात पाई।

(7) **ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ि.** :– आप का पहला निकाह'' ज़ैद बिन हरिसा'' रज़ि. से हुआ था। जब ज़ैद रज़ि. ने आपको तलाक़ दे दी तो 5 हिजरी में आप सल्ल. के अक़्द में आई। 51 साल की उम्र में 20 हिजरी में मदीना में वफ़ात पाई।

(8) **जुवैरिया रज़ि.** :– आपके पहले शौहर'' मुसाफ़ेह बिन सफ़वान'' थे। 5 हिजरी में जंगी क़ैदी बनकर आई थीं। आप सल्ल. ने इन्हें आज़ाद करके अपने निकाह में लिया। आप अपनी क़ौम के सरदार की बेटी थीं। आप सल्ल. से निकाह के वक़्त उम्र 26 साल थी। 71 साल की उम्र में 56 हिजरी में फ़ौत हुई।

(9) उम्मे हबीबा बिन्ते अबु सुफ़यान रज़ि. :- आप के पहले शौहर'' उबैदुल्लाह बिन जहश'' थे। इन्हीं के साथ **हब्शा** हिजरत की। वहां जाकर यह मुरतद हो गये। वहीं आप सल्ल. ने इन्हें निकाह का पैग़ाम भेजा। बादशाह **नजाशी** ने आपका खुत्बा पढ़ा। यह निकाह 6 हिजरी में हुआ उस वक्त आप की उम्र 36 साल थी। 72 साल की उम्र में 44 हिजरी में फ़ौत हुई।

(10) सफ़िया रज़ि. :- आपके वालिद का नाम' हई' और मां का' बर्रा' था। पहले शौहर का नाम' सलाम' और दूसरे का' कनाना' है। आप ख़ैबर में बंदी बन कर आई। आप सल्ल. ने आज़ाद करके अपने निकाह में लिया। 15 हिजरी में 50 साल की उम्र में वफ़ात हुई।

(11) मैमूना बिन्ते हारिस रज़ि. :- आपके पहले शौहर' हुवैतब' फिर दूसरे' अबु रहम' हुए। इनके इन्तेक़ाल के बाद 36 साल की उम्र में आप सल्ल. से निकाह हुआ। 3-4 साल आप सल्ल. के साथ गुज़ारे। 80 साल की उम्र में 51 हिजरी में वफ़ात पाई।

बेटे-बेटियां

(1) क़ासिम :- इन्हीं के नाम पर आप सल्ल. की कुन्नियत' अबुल क़ासिम' है।

(2) अब्दुल्लाह :- इन्हीं का लक़ब' तय्यब' और'' ताहिर'' था।

(3) ज़ैनब रज़ि. :- यह आप सल्ल. की बड़ी बेटी हैं और सिर्फ क़ासिम से छोटी थीं। आपका निकाह ख़ाला जाद'' अबुल आस'' रज़ि. से हुआ।

(4) रूक़य्या रज़ि. :- आप बड़ी बहन ज़ैनब से 3 साल छोटी हैं। उसमान रज़ि. से आपका निकाह हुआ। अल्लाह की राह में शौहर के साथ हिजरत करने वाली पहली औरत हैं। 2 हिजरी में 21 साल की उम्र में फ़ौत हुई।

(5) उम्मे कुलसूम रज़ि. :- बड़ी बहन रूक़ैया रज़ि. के इन्तेक़ाल के बाद 3 हिजरी में उसमान रज़ि. से निकाह हुआ। 9 हिजरी में आपका इन्तेक़ाल हुआ।

(6) फ़ातिमा रज़ि. :- ख़दीजा रज़ि. की औलादों में आप सबसे छोटी हैं। जंगे बद्र के बाद' अली' रज़ि. से निकाह हुआ। 3 रमज़ान 11 हिजरी को इन्तेक़ाल हुआ। गुस्ल अली रज़ि. ही ने दिया और नमाज़े जनाज़ा भी आप ही ने पढ़ाई। (यह 6 औलादें ख़दीजा रज़ि. से हैं)

(7) इब्राहीम :- ' मारिया क़िबतिया' रज़ि. के बतन से 9 हिजरी में पैदा हुए। 18 माह की उम्र में 10 हिजरी में फ़ौत हुए।

नवासे- नवासियां

(1) अली :- वालिदा जैनब रज़ि. हैं। फ़त्ह मक्का के दिन यही नबी सल्ल. के पीछे ऊंटनी पर सवार थे।

(2) उमामा :- आपकी वालिदा भी ज़ैनब रज़ि. हैं। फ़ातिमा रज़ि. की वफ़ात के बाद अली रज़ि. से निकाह हुआ। जब अली रज़ि. भी अल्लाह को प्यारे हो गये तो मुग़ीरा रज़ि. से निकाह हुआ।

(3) अब्दुल्लाह :- आप रूक़य्या रज़ि. से हैं। 8 साल की उम्र में फ़ौत हुए।

(4) हसन :- फ़ातिमा रज़ि. से 3 हिजरी में पैदा हुए। आपकी नस्ल बाक़ी है।

(5) हुसैन :- फ़ातिमा रज़िं. से 4 हिजरी में पैदा हुए। 61 हिजरी में करबला में शहीद हुए। आपकी नस्ल भी दुनियां में बाकी है।

(6) जैनब :- आपकी भी वालिदा फ़ातिमा रज़ि. हैं। अब्दुल्लाह बिन जअफ़र रज़ि. से निकाह हुआ। आपका एक बेटा अदी हुआ।

(7) उम्मे कुलसूम :- यह भी फ़ातिमा रज़ि. से हैं। आपका निकाह उमर रज़ि. से हुआ। एक बेटा' ज़ैद' और एक बेटी' रूक़य्या' पैदा हुए। उमर रज़ि. के इन्तेक़ाल के बाद' औ़न' बिन जअफ़र से निकाह किया।

फ़ज़ाइल रसूल सल्ल.

(1) अल्लाह के रसूल सल्ल. ने फ़रमाया'' मेरी और मुझ से पहले के सभी अम्बिया की मिसाल ऐसी है जैसे किसी शख़्स ने एक घर बनाया और उस में हर तरह की ज़ीनत पैदा की लेकिन एक कोने में एक ईट की जगह छुट गई अब लोग आते है और घर को चारो तरफ से घुमकर देखते है, और तअज्जुब में पड़ जाते हैं लेकिन यह भी कहते जाते

हैं कि यहां पर एक ईंट क्यों न रखी गई? तो मैं ही वह ईंट हूँ और मैं ही' ख़ातिमुन्नबीईन' हूँ।'' (बुख़ारी–3535, मुस्लिम–6231)

(2) '' मेरे 5 नाम हैं। मैं' मुहम्मद', अहमद' और' माही' (मिटाने वाला) हूँ कि अल्लाह मेरे ज़रिये कुफ़्र को मिटायेगा और में' हाशिर' हूँ कि तमाम इन्सानों का मेरे बाद हश्र होगा और मैं' आक़िब' हूँ यानि ख़ातिमुन्नबीईन हूँ। मेरे बाद दुनिया में कोई नया पैग़म्बर नहीं आएगा।'' (बुख़ारी–3532, मुस्लिम–6367)

(3) '' मुझे 6 चीज़ों के जरिये बाक़ी अम्बिया पर फ़ज़ीलत दी गई है। (1) मुझे जामेअ कलमात अता किये गए (2) दुश्मन पर रौअब क साथ मेरी मदद की गई (3) माले ग़नीमत मेरे लिए हलाल किया गया (4) मेरे लिए ज़मीन को मस्जिद और उसकी मिट्टी तयम्मुम के लिए पाक क़रार दी गई (5) मुझे तमाम मख़लूक़ की तरफ़ रसूल बना कर भेजा गया और (6) मुझ पर अम्बिया अलैहि. का सिलसिला ख़त्म कर दिया गया।'' (यानि अब कोई नया नबी आने वाला नहीं) (मुस्लिम–मिश्कात–5501)

(4) '' मैं क़यामत के दिन तमाम औलादें आदम का सरदार हूँगा। सब से पहले मेरी क़ब्र खुलेगी और मैं ही सबसे पहले सिफ़ारिश करने वाला होऊंगा जिसकी शफ़ाअत कुबूल की जाएगी।'' (इब्ने माजा–4308, मुस्लिम–6209 अबुहुरैरा)

(5) '' मैं क़यामत के दिन तमाम औलादे आदम का सरदार हूँगा। मेरे हाथ में' हम्द' का झन्ड़ा होगा। आदम अलैहि. समेत तमाम अम्बिया मेरे झन्ड़े तले होंगे। सबसे पहले मेरी क़ब्र फटेगी और मैं इन चीज़ो पर फ़ख़्र नही करता।'' (इब्ने माजा–4314–अबि बिन कअब रज़ि.)

हुब्बे रसूल सल्ल.

आप सल्ल. का फ़रमान है कि–

'' कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता। जब तक कि मैं उसे उसके अहलो अयाल, माल व दौलत और तमाम लोगों से ज़्यादा प्यारा न हो जाऊं।'' (मुस्लिम–55, – 56, मिश्कात–05–अनस रज़ि., बुख़ारी–15)

मुहब्बते रसूल सल्ल. की अलामात

1. आप सल्ल. के दीदार ओर सोहबत की शदीद तमन्ना करना!

2. आप सल्ल. ने जिन बातों (कामों) के करने का हुक्म दिया है, उन्हें मानना और करना ओर जिन बातों से बचने का हुक्म दिया है, उनसे बचना।

3. आप सल्ल. पर अपनी जान व माल निछावर करने के लिए हर वक़्त तैयार रहना।

4. आप सल्ल. की सुन्नत की हिमायत और ताईद और आप सल्ल. पर नाज़िल हुई शरीयत की पैरवी और दफ़ाअ करना।

आप सल्ल. की इताअत और पैरवी

इर्शादे बारी तआला है '' हमने तमाम रसूलों को सिर्फ़ इसलिए भेजा कि अल्लाह के हुक्म से उनकी इताअत की जाए।'' (निसा–आयत–64)

''जिसने रसूल की इताअत की गोया उसने अल्लाह की इताअत की।''(निसा–80) इसलिए कि '' नबी सल्ल. अपनी मर्जी से कुछ नहीं कहते। बल्कि वह तो वहय होती है जो उन की तरफ़ की जाती है। (नज्म–आयत–3,4)

आप सल्ल. की मुख़ालिफ़त हराम है '' इस (रसूल सल्ल.) की मुख़ालिफ़त करने वालों को डरना चाहिये कि कहीं वह फ़ित्ने में गिरफ्तार न हो जाएं और उन पर दर्दनाक अज़ाब न आ जाए।'' (नूर–आयत–63)

आप सल्ल. ने फ़रमाया ''मेरी सारी उम्मत जन्नत में जायेगी। सिवाए उसके जो इन्कार करें आप सल्ल. से पुछा गया कि इन्कार कौन करेगा? तो आपने फ़रमाया''जिसने मेरी इताअत की वह जन्नत में जाएगा और जिसने मेरी नाफ़रमानी की तो गोया उसने इन्कार किया।'' (बुख़ारी–7280)

आप सल्ल. की इताअत और पैरवी करने से अल्लाह की मुहब्बत नसीब होती है अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखतें हो तो मेरी (नबी सल्ल. की) पैरवी करो। अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा और तुम्हारे गुनाह भी बख़्श देगा।'' (आले इमरान–आयत–31)

आप सल्ल. की बात के मुक़ाबले किसी और की बात को मानना या उसे तजीह देना

अपने आमाल को बर्बाद करना है इसलिए कि ''ऐ ईमान वालों! अल्लाह का हुक्म मानों और उसके रसूल की इताअत करो और अपने आमाल को ज़ाया व बर्बाद न करो।'' (मुहम्मद–आयत–33)

सुन्नत– नबी सल्ल. से सही सनद से साबिद शुदा अक़्वाल अफ़आल और तक़दीर को सुन्नत कहा जाता है। यानि आप सल्ल. ने उम्मत को जो काम करने का हुक्म दिया या जिससे मना किया या जो काम करके दिखाया या जो काम आप सल्ल. की मोजूदगी में सहाबा किराम ने किया और आप सल्ल. ने उस पर ख़ामोशी इख़्तियार की और मना नही किया सब को सुन्नत कहा जाता है।

बिदअत– हर वह नया काम जिसे दीन समझ कर सवाब की नीयत से किया जाए और उसकी असल नबी सल्ल. और सहाबा किराम रज़ि. से साबित न हो, बिदअत कहलाता है। जैसे– अज़ान से पहले कुछ पढ़ना क्योंकि अज़ान नबी सल्ल. के ज़माने में भी दी जाती थी और बिलाल रज़ि. ''अल्लाहु अकबर से अज़ान शुरू करते थे। अब बाद में अपनी तरफ़ से कोई चीज़ बढ़ाना खिलाफ़े सुन्नत यानि बिदअत कहलाएगा। इसी तरह नमाज़ के लिए ज़बान से नीयत करना भी आप सल्ल. और सहाबा रज़ि. से साबित नहीं।

1. आप सल्ल. ने फ़रमाया ''दीन में इजाद किया गया हर नया काम बिदअत है। हर बिदअत गुमराही है और हर गुमराही जहन्नम में ले जाने वाली हैं।'' (मुस्लिम–1471,इब्ने माजा–45, नसाई–1581)

2. मै तुम्हारे लिए दो चीज़े छोडे जा रहा हूँ। जब तक इन्हें मज़बूती से थामे रहोगे, गुमराह न होगे। वह दो चीज़ें है (1) अल्लाह की किताब (कुरआन) 2. मेरी सुन्नत (हदीस)। (मौता मालिक–1601, मुसनद अहमद)

3. अबु हनीफ़ा रह. ने फ़रमाया ''अगर मेरा कोई क़ौल कुरआन या हदीस रसलू सल्ल. के ख़िलाफ़ हो तो मेरी बात को छोड़ दो।'' और यह कि ''सही हदीस ही मेरा मज़हब है। यानि जब कोई सही हदीस मिल जाए तो उसी को मेरा मज़हब समझो।(दुर्रे मुख्तार जिल्द – 1 सफ़ा 51)

अबु हनीफ़ा रह. फ़रमाते थे कि लोग हिदायत पर रहेंगे जब तक कि उनमें हदीस के तुलबा होंगे। जब हदीस छोड़कर और चीज़ तलब करेंगे तो बिगड़ जायेंगे।'' (हक़ीक़तुल फ़िक्ह–सफ़ा–92)

4. शाफ़ई रह. ने फ़रमाया ''मेरे अक़्वाल (फ़तावों) के खिलाफ़ अगर नबी सल्ल. की सही हदीस मिल जाए तो हदीसे रसूल सल्ल. की पैरवी करो और मेरी बात छोड़ दों।'' (हक़ीकतुल फ़िक्ह सफ़ा–96)

5. मालिक रह. फ़रमाते हैं ''मै एक बशर हूँ। मेरी बात सही भी हो सकती है और ग़लत भी। लिहाजा मेरी बातों को देखो उनमें जो अल्लाह की किताब (कुरआन) और हदीसे रसूल सल्ल. के मुताबिक़ हों उन्हें पकड़ लो और जो खिलाफ़ हो उन्हें छोड़ दो।'' (हक़ीक़तुल फ़िक्ह–सफ़ा–95)

6. अहमद इब्ने हम्बल रह. ने फ़रमाया न मेरी तक़लीद करना और न मालिक (रह.) की न औज़ाई (रह.) की न नख़ई (रह.) की और न किसी और की। बल्कि अहकाम वहीं से लो जहां से इन्होंने लिये है। यानि कुरआन व हदीस से।''(हक़ीक़तुल फ़िक्ह–सफ़ा–101)

लिहाज़ा हर कलमा गो शख़्स को अमल करने से पहले देखना चाहिये कि इस बारे में आप सल्ल. का क़ौल या तरज़े अमल क्या है? मसलन वुज़ू करने से पहले यह जानें कि आप सल्ल. किस तरह वुज़ू करते थे? इसी तरह आप सल्ल. किस तरह नमाज़ पढ़ा करते थे? इसलिए कि आप सल्ल. का इर्शाद है ''नमाज़ उस तरह पढ़ो, जिस तरह मुझे नमाज़ पढ़ते देखते हों।'' (बुख़ारी–631, अबुदाऊद–823)

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्ल. के बारे में अक़ीदा

मुहम्मद सल्ल. की बेअदबी कुफ्र है और सबसे बड़ी बेअदबी यह है कि आप सल्ल. का कलमा पढ़ कर आप सल्ल. के क़ौल व फ़ैअल (सुन्नत) की बेअदबी की जाए। उसका मजाक़ उड़ाया जाए या उसका इन्कार किया जाए। इसके अलावा यह कि आप सल्ल. के अहकामात मानने के बजाए किसी उम्मती के अहकामात को माना जाए।

आप सल्ल. के औसाफ़ व कमालात तो झुम–झुम कर बयान किये जाएं और आप सल्ल. की सुन्नत से भागा जाए। जबकि फरमाने इलाही के मुताबिक

1. ''मुहम्मद सल्ल. सब अम्बिया से अफ़ज़ल है। (बक़रा–आयत–252,253)
2. आप सल्ल. पर आसमानी हिदायत की पैरवी, अल्लाह की बन्दगी और तौहीद ज़रूरी थी। (बक़रा–आयत–285)
3. आप सल्ल. की इताअत हम पर फ़र्ज़ है। (आले इमरान–आयत 31)
4. आप सल्ल. अल्लाह के बन्दे और बशर हैं। (बक़रा–23,90,128,129,151)
5. आप सल्ल. बशीर व नज़ीर हैं। (मायदा–आयत–19)
6. आप सल्ल. अपने या किसी के नफ़े और नुक़्सान के मालिक नहीं (अनआम–50, आराफ़–188, जिन्न 21)
7. आप सल्ल. को गै़ब का इल्म न था। (अनआम–50, युसुफ, 3, हूद–49)
8. आप सल्ल. का काम दीन पंहुचाना था। (आले इमरान–20, आराफ़–2, हूद–12)
9. आप सल्ल. को मोअजेज़ात का इख़्तियार न था। (ताहा–133, मुआमिन–78)
10. आप सल्ल. को क़यामत के वक़्त का इल्म न था (आराफ़–187, ताहा–15, नमल–65)
11. आप सल्ल. को भी मौत आना थी। (आले इमरान–144, अम्बिया–35, ज़ुमर–30)
12. आप सल्ल. का मुश्किल कुशा अल्लाह था। (अहज़ाब–3, नम्ल–79, ज़ुमर–38)
13. आप सल्ल. को मुक़ामे मेहमूद मिलेगा। (इस्रा–79)
14. आप सल्ल. किसी के कारसाज़ या मुश्किल कुशा नहीं। (क़सस–56)
15. आप सल्ल. का उस्वा हमारे लिए नमूना है। (अहज़ाब–21, क़लम–4)
16. आप सल्ल. के ज़िक्र पर दुरूद पढ़ना चाहिये। (अहज़ाब–56)
17. आप सल्ल. शायर न थे। (यासीन–69)
18. आप सल्ल. कोई नये रसूल नहीं। (अहक़ाफ़–9)
19. आप सल्ल. अल्लाह के आख़िरी नबी हैं। (40)
20. हिदायत देना आप सल्ल. के इख़्तियार में न था। (क़सस–56)
21. आप सल्ल. ''हाज़िर व नाज़िर नहीं है। (बक़रा–133, आले इमरान–44, युसुफ–102)
22. आप सल्ल. तमाम आलम के लिए रहमत बना कर भेजे गये (अम्बिया–107)

आप सल्ल. की उम्मत पर मेहरबानियां, दीन के लिए जद्दो जहद और उम्मत की भलाई और बख़्शिश के लिए मेहनत और कोशिशों का तक़ाजा है कि यह उम्मत आप की ज़ाते मुबारका पर ज़्यादा से ज़्यादा दुरूद व सलाम भेजे। आप सल्ल. पर दुरूद व सलाम न भेजने वाला बख़ील और जन्नत से दूर है।'' (मिश्कात–872, तिर्मिज़ी)

''आप सल्ल. पर एक दफ़ा दुरूद पढ़ने से अल्लाह की 10 रहमते हासिल होती हैं। 10 गुनाह माफ़ होते है और 10 दर्जे बुलन्द होते हैं (मिश्कात–861, नसाई, अनस रज़ि.)

''अल्ला हुम्मा सल्लि अला मुहममदिवं व अला आलि मुहममदिन कमा सल्लयता इला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहिमा इन्नक हमीदुम मजीद। अल्लाह हुम्मा बारिक अला मुहममदिंव व अला आलि मुहम्मद। कमा बा रकता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा। इन्नक हमीदुम मजीद।''

अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें मुहम्मद सल्ल. के लाए दीन पर अमल की तौफ़ीक अता फ़रमाए और आप सल्ल. के सिखलाए तरीक़े पर चलायें।

आमीन या रब्बल आलामीन

आपका दीनी भाई

मुहम्मद सईद

Email: saeed.tonk@gmail.com

मो. 09214836639